Research Paper
E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 4 | APRIL 2024

विभिन्न परिस्थितयों में मानव अनुकूल : विभिन्न जनजातियों के सन्दर्भ में एक अध्ययन

डॉ. कविता सिंह [1]

[1] **सहायक आचार्य भूगोल (अतिथि VSY), आईमाता राजकीय कन्या महाविद्यालय , सोजत सिटी, पाली.**

ABSTRACT:

मनुष्य अपने अस्तित्व व आजीविका के लिए अपने चारो और अवस्थित पर्यावरण पर निर्भर है। पर्यावरण के दो मूल तत्व है :- प्राकृतिक और कृत्रिम वातावरण। वातावरण के अन्तर्गत भू भाग, जलवायु, वनस्पति के प्रकार, इसका अभाव या प्रचुरता, सापेक्ष अवस्थिती तथा स्थिती आते है। पृथ्वी की सतह का प्राकृतिक वातावरण एक समान नही होने के कारण दुनिया भर में मानव पर्यावरण की विभिन्न प्रवृतियों का जन्म हुआ है को प्राकृतिक परिस्थितयो के। विभिन्न समुदायों ने सदियों को प्राकृतिक प्ररिस्थितियो के अनुरुप ढाल लिया है और परिस्थितयों में परिवर्तन लाकर अपनी आजीविका सुनिश्चित की है।

KEYWORDS:

शीत क्षैत्र , गर्म क्षैत्र , पठारी क्षैत्र , पर्वतीय क्षैत्र।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
29th April 2024	30th April 2024

विषय प्रवेश:-

शीत क्षेत्र:-

उत्तरी ध्रुवीय क्षेत्र के चारो ओर ग्रीनलैण्ड से लेकर पश्चिम में अलास्का और बेरिंग जलडमरूमध्य के पार साइबेरिया के उत्तरी-पूर्वी चुकुची प्रायद्वीप क्षेत्र तक एक पतली पट्टी में एस्किमो लोगों का निवास पाया जाता है। अति शीतल जलवायु का प्रभाव इनके जीवन पर प्रत्यक्ष दिखाई देता है। प्रकृति की इन कठिन परिस्थितयो मे रहकर जीवन निर्वाह करने का कार्य एस्किमों लोगों द्वारा किया जा रहा है। यहाँ भूमि वर्ष भर लगभग बर्फ से ढंकी रहती है। शरद ऋतु में यह बर्फ अधिक मोटी और कठोर हो जाती है। जनवरी मास का औसत तापमान - 45 डिग्री सेन्टीग्रेड होता है। ग्रीष्म ऋतु बहुत छोटी होती है। यहाँ के बर्फीले वातावरण में श्वेत भालू, रेण्डियर, सूमर वाले विभिन्न पशु पाये जाते है। समुद्र में बर्फ की तह के नीचे विभिन्न किस्म की मछलियां पाई जाती है। स्थल पर आर्कटिक खरगोरा, कैरिबा, मुस्क और चिड़िया पाई जाती है जिनसे इन्हें भोजन प्राप्त होता है। जीव - जन्तुओ से न केवल खाने के लिए मांस किन्तु चमड़ा और खाले भी प्राप्त होती है। आखेट की क्रिया इस प्रदेश में ग्रीष्म ऋतु में अधिक की जाती है, आखेट से प्राप्त खालों द्वारा वस्त्र तैयार किया जाता है। इनके वस्त्र बहुत ही अच्छे कटे और सिले होते है। जल और आर्द्रता से बचाव के लिए वाटर प्रूफ वस्त्रों को तैयार किया जाता है। एस्किमो स्त्री-पुरुषों का पहनावा लगभग समान होता है। पुरुषों की बाहदार जर्सी को 'तिमियार' कहा जाता है। सिर पर एक प्रकार की टोपी पहनी जाती है। इनके जूते सील की खाल के बनाये जाते हैं। यह जूते दोहरे बनाये जाते है ताकि इनमें पानी न जा सके। एस्किमो का जीवन भौगोलिक - वातावरण द्वारा पूर्णतया सीमित है। अपने घरों के निर्माण के लिए यह जाति समुद्र की लहरों द्वारा बहकर आई लकड़ी तथा स्थानीय पत्थर का उपयोग करते है। पशुओं की हड्डी तथा चमड़े का भी प्रयोग गृह निर्माण में किया जाता है। जाड़े की भयानक ऋतु से बचाव के लिए बड़े-बड़े गुम्बजनुमा घर 'इग्लू' बनायें जाते है। मकान में एक बजे कमरा होता है, कमरे में लोग बर्फ की शिलाओं पर ही खालों की कई परते बिछाकर सोते व उठते-बैठते हैं। इग्लू मे प्रकाश तथा गर्मी के लिए दिन रात चर्बी के दिये जलाये जाते है। शरद ऋतु में एस्किमो बर्फ के उपर और ग्रीष्म ऋतु में टन्ड्रा की चिकनी काई के ऊपर अपनी स्लेज गाड़ी और कुत्ते को साथ लेकर चलते है। स्लेज गाड़ी या तो व्हेल मछली की हड्डी की बनाई जाती है या जहाँ लकड़ी पाई जाती है वहाँ इसके निर्माण में लकड़ी का उपयोग किया जाता है। ग्रीष्म काल में ये लोग कयाक नामक गाड़ी का उपयोग करते है। शीतकाल के होते - होते एस्किमो परिवार, तट के समीप एकत्र होने लगते हैं। ये लोग तट के निकट सील मछली को पालते हैं। सील मछली के माँस को खाया जाता है साथ ही साथ इसकी चर्बी को जलाकर शीतकाल में मकानों को गर्म करते है एवं रोशनी, पाप्त करते हैं। ग्रीष्मकाल में बेरी, कन्दमूल तथा अन्य प्रकार की वनस्पति उपयोग के लिए एकत्रित करते है। इस समय यहां के लोगों का प्रमुख व्यवसाय जंगली जानवरों का शिकार होता है। एस्किमो का भोजन सील, व्हेल, बालरस आदि जल जीव है। कैरिबो नामक बारहसिंगा का भी शिकार किया जाता है। काफी मांस तो एस्किमो लोग कच्चा ही खा जाते है। कभी-कभी मांस को उबालकर तथा सुखाकर खाते है। समुद्री वनस्पति भी खायी जाती है। भोजन की अधिक तंगी के समय तम्बुओं की खाल के टकड़े उबाल कर शोरधा पी जाते है। आखेट के लिऐ हार्पून या बर्छी का प्रयोग किया जाता है। भोजन एकत्रित करने का कार्य पुरुषों द्वारा होता है। शिकार को काटना व बनाना खाल तैयार करना, सुखाना, चमड़े की पोशाक बनाना और झोपड़ी बनाने का कार्य सित्रियां ही करती है। कुछ अस्त्रों और वस्त्रों को छोड़कर एस्किमो की अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं होती है।

गर्म क्षेत्र :-

'पिग्मी' जनजाति को 'नीग्रीटो' के नाम से भी जाना जाता है। इन्हें सर्वाधिक आदिकालीन मानव कहा जाता है। यह जनजाति अफ्रीका के विभिन्न भागों में फैले हुऐ है। अफ्रीका के पूर्वी पिग्मी जिन्हें 'मबुती' कहा जाता है। जायरे देश के इतुरि वन प्रदेश में निवास करते हैं। केन्द्रीय पिग्मी 'बत्वा' कांगो गणराज्य में फैले हुए है। विग्मियों का पश्चिमी वर्ग 'बोन्गो' गैबान में निवास करता है। यहां जलवायु वर्ष पर्यंत उष्ण और आर्द्र रहती है। इस प्रदेश में वर्षभर मासिक तापमान लगभग 27 डिग्री सेन्टीग्रेड होता है और सालभर संवहनीय वर्षा होती है। ज्यादातर पिग्मी शिकारी और संग्राहक होते है और कृषि व पशुपालन नहीं करते है। पिग्मी को अफ्रीका के घुमंतू शिकारी संग्राहकों का सबसे बड़ा समूह माना जाता है। बामूति पिग्मी जनजाति का एक अत्यंत आदिम समूह है, पिग्मी का अन्य समुह तवा (बतवा) के नाम से भी जाना जाता है। कालान्तर में तुत्सी समुदाय के साथ व्यापार और हुतु समुदाय के साथ कृषि विकसित की है।

बुशमैन दक्षिण अफ्रीका के सर्वाधिक पुराने निवासी माने जाते है। अफ्रीका का विशाल कालाहारी रेगिस्तान को उनका घर माना जाता है। बुशमैन अफ्रीका के सबसे पुराने सांस्कृतिक समूह है। बुशमैन शिकारी और संग्राहक रहे है। उनके आहार का 70 से 80 प्रतिशत पादप (जामुन कंद, मूल, और खरबुजे) से आते है। इसके संग्रहण में महिलाओं की प्रमुख भागीदारी होती है। अपने आहार का शेष भाग वह मांस (मुख्यत: हिरण) से पूरा करते हैं। वह इकठ्ठे किये गये लकड़ियों से अपने लिए अस्थायी घर बनाते हैं। बुशमैन जनजाति में

भूमि या पशओं के स्वामित्व की अवधारणा नहीं है और न ही वे खेती करते न ही पशुपालन करते है। यह लोग वर्षा के मौसमी परिवर्तन के साथ है स्थान परिवर्तन करते हैं शुष्क मौसम के दौरान यह जल स्त्रोतों के पास रहते हैं अन्य वन आहारों के अलावा शुतुरमुर्ग के अण्डे भी एकत्र किये जाते हैं और अण्डो के खोल को पानी रखने के बर्तन के रूप में प्रयोग किया जाता है। अपनी भौगोलिक अवस्थिति के आधार पर बुशमैन कम से कम 18 और अधिक से अधिक 104 प्रजातियों का उपभोग करते हैं।

बद्दू अटलांटिक महासागर के फारस की खाड़ी और यमन से लेकर तुर्की की सीमा तक मरुस्थल में निवास करते हैं साधारणतः बद्दू पशुपालन में संलग्न है और मौसम के साथ चराई की दशा में अनुकूल स्थान परिवर्तन करते है। दूध, ऊन और मांस के लिए भेड़ बकरी और ऊँट पालना इनकी आजीविका का प्रमुख साधन है। मांस को लम्बे समय तक नहीं रख पाने के कारण इससे सीमित मात्रा में हमित बनाया जाता है। हमित वसा के स्त्रोत के रूप में लंबे समय के लिए संरक्षित किया जाता है और इसका उपयोग मसाले तथा खाने में जायका लाने के लिए भी किया जाता है। दूध और दूध के उत्पाद पारम्परिक बद्दू आहार का बड़ा हिस्सा। वह विभिन्न प्रकार से दूध का संरक्षण करते हैं तथा उनके सामान्य उत्पाद है रायब, मक्खन, लेवन, जमीद और अफीक आदि।

पठारी क्षेत्र:-

मासाई, जिसे मसाई भी कहा जाता है, पूर्वी अफ्रीका की चरवाहा खानाबदोश समुदाय है। मासाई मूल रुप से एक भाषाई शब्द है, जो पूर्वी सूडानी भाषा का उल्लेख करता है। मासाई को अफ्रीका का विशिष्ट मवेशी चरवाह समुदाय माना जाता है। हाल के दशकों में मसाई चरवाहों ने मकई गेहूँ उगाना, गिनी मुर्गी और शुतरमुर्ग पालना शुरु कर दिया है। चरवाहा मासाई पूरी तरह खाना बदोश है और वे साले भर समूहों में भटकते रहते हैं। वे लगभग पूरी तरह अपने पशुओं के मांस, खून और दूध पर निर्वाह करते हैं वे बरसात के दौरान रिफ्ट घाटी के सूखे सवाना क्षेत्र में रहते हैं और लम्बे सुखे के मौसम में उच्च पठारों के बारहभाषी घास के मैदाने में चले जाते हैं। गोलाकार संरचना में स्थित मिट्टी और गोबर से निर्मित उनके बाड़े चारों और से कंटीली झाड़ियों से घिरे होते हैं। बहुपत्नी प्रथा समुदाय के वृद्ध पुरुषों में आम है जिनकी पहली दो पत्नियों को मवेशियों में हिस्सा मिलता है जबकि बाद की पत्नियों को वरिष्ट पत्नियों से जानवर मिलते है। विवाह में पशुधन के रुप मे वधू का मूल्य तय किया जाता है।

पर्वतीय क्षेत्र :-

गुज्जर या, गुर्जर एक संजातीय समूह है जिनकी आबादी, भौगोलिक रूप से हिमालय में फैली हुई है। गुज्जर मुख्यतः एक चरवाहा समुदाय है। उनमें मौसमी प्रवास का चलन है, उनकी यह विशेषता उन्हे ऋतु प्रवास का सबसे अच्छा उदाहारण बनाती है। अभी भी गुज्जरों का एक छोटा हिस्सा खानाबदोश जीवन व्यतीत कर रहे है। गुज्जरों के अलावा गद्दी और बक्करवाल भी घुमतू समुदाय के उदाहरण है।

खासी जनजाति मेघालय के खासी और जयंतिया पहाड़ी जिलो में रहती है। खासी समाज मातृसत्तात्मक है। पुरुषों और महिलामों की सभी कमाई संयुक्त रुप से होती है और प्रधान महिला द्वारा प्रशासित होती है। संपत्ति मां से बेटी को विरासत में मिलती है। खासी लोग मछली पकड़ना, पक्षियों का शिकार करना, बकरियों, मवेशियों, सूअरों, कुत्तो, मुर्गियो, बताख और मधुमखी पालन का कार्य करते हैं।

नागा, नागापहाडियों में रहने वाली जन जातियो का समूह नागालैंड पूर्वोत्तर भारत में एक राज्य है। इसमे मिश्रित मूल, विभिन्न संस्कृतियों और. बहुत अलग शारिरिक बनावट और डिखावट वाली 20 से अधिक जनजातियां शामिल है। लगभग हर गांव की अपनी बोली होती है। ज्यादातर नागा छोटे- छोटे गांवों में रहते है जो रणनीतिक रूप से पहाड़ियों पर और पानी के पास स्थित है। झूम खेती आम तौर पर इस जनजाति में प्रचलित है। नागा समाज पितृसतात्मक समाज है। नागा लोगों की आय के प्रभाव स्त्रोत - जंगली पशुओं का आखेट, मछली पकड़ना, कृषि करना तथा मोटा कपडा चढ़ाई तथा टोकरिया बनाने का है।

साराश:-

जीवित रहने के लिए सभी समाजों को अपने वर्तमान संस्कृति को देखते हुए उनके पर्यावरण द्वारा प्रस्तुत अवसरों और बाधाओं के अनुकूल होना पड़ता है। मानव अनुकूलन में जैविक और व्यवहारिक दोनों तंत्र शामिल है। जब कोई पर्यावरणीय तनाव निरंतर होता है और कई पीढ़ियों तक रहता है, तो जैविक विकास के माध्यम से सफल अनुकूलन विकसित हो जाता है। प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित कर विभिन्न मौसम में स्वय को स्थापित करने का कार्य मनुष्य सदियों से करता आ रहा है ज़िसके सर्वोत्तम उदाहरण विभिन्न महाद्विपों में निवास कर रही हमारी जन जातियां और समुदाय है।

REFERENCES

1. बी.एल. गर्ग :- पर्यावरण प्रकृति और मानव
2. हरिमोहन सक्सेना :- भारत और विश्व भूगोल
3. शीलवन्त सिंह, कृति रस्तोगी, सारिका :- भौतिक और मानव भूगोल
4. माजिद हुसैन :- भारत एवं विश्व का भूगोल
5. माजिद हुसैन : मानव भूगोल
6. डॉ. डी. एस. मौर्यः - मानव भूगोल